वित्तीय साक्षरता

युवा समुदाय के लिए

FINANCIAL LITERACY FOR YOUNG PEOPLE

Simavi
Iedereen een gezonde basis.

NEEDS
EXIST TO IMPACT

वित्तीय साक्षरता

युवा समुदाय के लिए

EXIST TO IMPACT

(Network for Enterprises Enhancement and Development Support)
House Plot No. 275, Near Charkipahari, Tapovan Road,
P.O. Ashram Karnibad, Deoghar - 814143
Jharkhand (INDIA)
Tel. : +91-9204060496
E-mail : needspostmaster@gmail.com
Website : www.needsngo.in

NEEDS EXIST TO IMPACT Simavi

अनुक्रमणिका

- मनोगत 1
- अफलातीन उपक्रम 2

भाग-1: मेरी पहचान, मेरी भावनाएँ, मेरे सपने, मेरा लक्ष्य, मेरे दोस्त, मेरी दोस्ती, मेरा पर्यावरण, मेरी क्षमताएं तथा समूह की भावना

- मैं किसका कौन 5
- मैं हूँ कौन 6
- हमारी भावनाएं 8
- मेरे सपने 9
- खरगोश तथा कछुए की कहानी 11
- तोड़ डाले हम दीवारें अपने मन की 13
- प्रकृति की देन, हमारे संसाधन 14

भाग-2: बच्चों के अधिकार और जिम्मेदारियाँ, बच्चों की समस्याएं, वजह, तथा विकल्प

- हमारी रशीदा, हमारा जॉन 16
- बाल अधिकारों का चित्र 17
- बाल विवाहित लड़की के जीवन का एक दिन 18

भाग-3: वित्त शिक्षा, जमाखर्चा, निवेश, अनुमानित बजट, बैंक का कामकाज, जिम्मेदार ग्राहक

- पैसों का खेल 20
- बचत के विभिन्न रास्ते 21
- सरल ब्याज और चक्रवृद्धि ब्याज 22
- मेरा अनुमानित बजट 24
- पारिवारिक अनुमानित बजट 25
- हमारी बैंक 26
- मैं ग्राहक 29

भाग-4: सामाजिक सवाल तथा परिवर्तन की तैयारी

- भूमिका कार्ड 31
- समस्या का चुनाव तथा नियोजन (जमीन के मिट्टी का बहाव) 33
- समस्या का चुनाव तथा नियोजन (बाल–विवाह) 34

भूमिका...

प्रिय मित्रों,

अफलातीन परिवार में आपका स्वागत है। आज तक अफलातून कार्यक्रम छह से चौदह साल के बच्चों के लिए स्कूली स्तर पर चलता रहा है। इन्हीं अनुभवों से प्रेरित होकर हमने अफलातीन कार्यक्रम तेरह से अठारह साल के उम्र के बच्चों के लिए बनाया है। टीन एज यह अंग्रेजी शब्द है, जिसका मतलब है, नवयुवक/नवयुवती – बड़े हो रहे बच्चे। इस उम्र के लड़के तथा लड़कियों की खुद की पहचान, उनके सपने तथा उनके आस–पास के माहौल में बदलाव आता रहता है। एक जिम्मेदार व्यक्ति बनने का अहसास, खुद के अधिकारों एवं जिम्मेदारियाँ के प्रति अवगत होने के साथ बड़े होकर कुछ अलग करने की चाह पनपने लगती है। इसलिए इन बच्चों के साथ काम करते समय इन मुद्दों पर विचार–विमर्श करना जरुरी है। यही सोच अफलातीन कार्यक्रम का केन्द्रबिंदु बना है। इस उम्र के बच्चों के खास सवालों तथा उनसे जुड़े कुछ अहम सामाजिक मुद्दों पर एक परिचर्चा करने की प्रयास इस कार्यक्रम के द्वारा की गई है। इसमें ना सिर्फ बातों पर, बल्कि चर्चा पर ध्यान दिया गया है, कुछ कार्य करने पर भी जोर दिया गया है ताकि बच्चों में क्रियाशील सहभागिता एवं अपनें से शुरुआत करने की भावना उजागर हो। अफलातीन नारे के द्वारा ये बच्चे अपनी सोच को बढ़ावा देने में सक्षम होंगे। अफलातीन की पहचान, उसे पूरा करने की कोशिश, नियोजन, क्रियाशीलता तथा अथक प्रयास के साथ ही खुद का और आस–पास के समाज का विकास हो सकता है, इस सोच को कायम रखने की कोशिश इस पुस्तिका द्वारा की गई है। इस पुस्तिका की मूल सोच को ध्यान में रखकर अपने अनुभवों और कल्पनाओं को जोड़कर इस कार्यक्रम को अमल में लाए, तो ही हमारा उद्देश्य सफल हो सकता है। इस कार्यक्रम को शुरु करने में सबसे बड़ी दिक्कत है, उसे बड़े होते बच्चों के पसंद का बनाना। बचपन की मधुर यादों से निकलकर जवानी के दस्तक पर खड़ी यह पीढ़ी बहुत ही नाजुक मोड़ पर होती है। वास्तविक रुप में इनसे वार्तालाप करना एक आनंददायी अनुभव होता है। लेकिन उनके मन में उठे सवालों के सैलाबों से जुझना तथा उनके सवालों को सही दिशा देकर जवाबों को ढूढने के काम में सहयोग देना, यह और भी कठिन काम बन जाता है। सोलहवां साल इन बच्चों के लिए कई तरह से महत्वपूर्ण होता है। अलग–अलग किस्म की भावनाओं का सैलाव मन में आता रहता है, किसी से बात करने की चाह होते हुए भी, कुछ डर सा बना रहता है। अपने नजरिये से दुनिया को देखने तथा बदलने का सपना लिए घुमते हैं ये बच्चे। उनके सपनों के रास्तों को आसान बनाने के लिए किया गया अफलातीन कार्यक्रम, एक प्रयास है।

आपका साथी

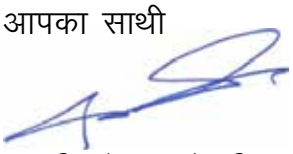

मुरारी मोहन चौधरी

अफलातीन उपक्रम.....

हर एक व्यक्ति में एक अफलातीन छुपा रहता है। नई कल्पनाओं को उजागर कर अपने जीवन को सुंदर बनाने की कोशिश, वह हर व्यक्ति करता रहता है। अपने साहस तथा मेहनत के बलबुते पर यह अफलातीन, जीवन का नया मतलब खोजने के काम में हमेशा आगे रहता है। इसी सोच से जीवन में बदलाव की उम्मीद पैदा होती है। लेकिन कई बार यह अफलातीन हमारे मन के अंदर छुपा रहता है, जिसकी हमें जानकारी भी नहीं होती। रोजमर्रा की जिंदगी में, उसे याद करने का समय ही नहीं मिलता। कई बार इंसान समाज में हो रहे अन्याय, विषमताओं के खिलाफ कुछ सोचने का, विकल्प ढूढने का प्रयास नहीं कर पाता है। उसी बरसों पुरानी मान्यताओं को लेकर बिना किसी सवालों या वैज्ञानिक आधारों के उन्हें स्वीकारता रहता है। इससे इंसान के अंदर नए सोच की चिंगारी मर जाती है। परिणामवश इंसान अपनी जिंदगी से मायुस होकर जीता रहता है, जिससे समाज में कोई बदलाव नहीं आता। इस समाज की दकियानुसी मान्यताओं को चुनौती देने का काम अफलातीन करता है। यह कोशिश बहुत ही बुनियादी और अहम है।

अफलातीन का काम पाँच मान्यताओं पर चलता है।

स्वयं की पहचान :

मैं स्वयं एक अलग व्यक्ति हूँ। मेरी एक खास पहचान है। मेरा स्वभाव खास है, यह मैं जानती हूँ। मैं मेरी भावनाओं को समझकर जिम्मेदारी से उसे दर्शाती हूँ। साथ ही मैं मुझमे कुछ बदलाव भी लाना जानती हूँ। मेरे सपनों तथा मेरे लक्ष्य को साकार करने के लिए मुझमें भरोसा पैदा होना जरुरी है, यह मैं जानती हूँ। प्रागतिक सोच से मुझे मेरे लक्ष्य तक पहुँचने में मदद मिलती है। हार न मानकर की हुई कोशिश मुझे जीत दिलाती है।

मेरे आस-पास के माहौल के साथ मेरा रिश्ता :

मैं मेरे समाज का एक हिस्सा हूँ। बदलाव के लिए मेरे प्रयास तथा माहौल पर निर्भर है, क्योंकि इससे मैं और मेरे समाज पर इसका असर होगा। इस समाज के सवालों को बिना सुलझाए मेरा जीवन आगे नहीं बढ़ सकता। मेरा विकास भी इसके बिना मुमकिन नहीं है। मेरे माहौल मे मेरा विकास छिपा है, यह मुझे पता होना चाहिए। इसलिए मेरे समाज के बुनियादी चीजों के प्रति मुझे सम्मान तथा प्यार बढ़ाना होगा।

संविधान -कानून का दायरा :

हमारे संविधान, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय कानूनों ने हमारे जीवन को एक दायरे में बांधा है। इन कानूनों की वजह से हमें कुछ अधिकार प्राप्त होते हैं तथा अधिकारों के साथ हमारी कुछ जिम्मेदारियाँ भी बनती है। मेरे साथ दूसरों के अधिकारों की सुरक्षा करने के साथ दूसरों के अधिकारों को सुनिश्चित करना भी मेरा कर्तव्य है। समाज विरोधी कानूनों से लड़कर, समाज के हित में कानूनों के निर्माण में भी मेरा सहयोग बना रहेगा। इससे मैं एक जिम्मेदार नागरिक बनता हूँ।

संविधान तथा कानून की मदद से मानवीय मूल्यों का सम्मान करना, यह मेरा कर्तव्य बनता है।

समाज की अर्थव्यवस्था को समझना :

समाज के साथ मुझे उसकी अर्थव्यवस्था को समझना भी बहुत जरुरी है। इसके बिना मेरा तथा मेरे समाज का हित नहीं हो सकता । इसलिए मुझे वित्तीय नियमों को समझना जरुरी है। इससे हम किसी भी वित्तीय नुकसान से बचे रहेंगे।

परिवर्तन के लिए प्रयास :

खुद को समझकर आस–पास के समाज/पर्यावरण को समझकर, अपने हकों तथा कर्तव्यों का मूल्य समझकर अपने आस–पास की अर्थव्यवस्था को जानकर जो परिवर्तन के लिए सामूहिक प्रयास करता है, इसके लिए जो नई कल्पनाओं, सपनों को सजाने के लिए नए विचारों को साथ में लेता है, वह है असली अफलातीन। परिवर्तन के लिए यह प्रयास सामाजिक या वित्तीय सुधारों के लिए हो सकते है।

अफलातीन कार्यक्रम में शामिल हर एक व्यक्ति इन पाँच संकल्पनाओं के आधार पर काम करता है। यह कार्यक्रम ज्यादातर नवयुवकों तथा नवयुवतियों के साथ काम करने वाली बड़ी उम्र के लोगों के साथ भी होता है। हर एक की उम्र, पेशा इस पर आधारित है। इस कार्यक्रम का नियोजन हॉलैण्ड में स्थित अफलातीन इंटरनैशनल संस्था करती है। बिहार एवं झारखण्ड के कई जगह पर इस कार्यक्रम का नियोजन नीड्स संस्था के द्वारा किया जा रहा है।

अफलातीन बच्चों का कार्यक्रम :

इस कार्यक्रम में नवयुवक बच्चों में होते शारीरिक तथा मानसिक बदलावों को ध्यान में रखकर बनाया गया है। पहले सत्र से बच्चों में होने वाले बदलाव के साथ उनकी अपनी पहचान को लेकर बातें की गई है। इससे उनकी अपनी पहचान आनेवाले सत्रों में ज्यादा मजबूत होती जाएगी। अपने समाज, तथा पर्यावरण से जुड़ा नाता और गहरा होता जाएगा एवं अपने अधिकारों एवं जिम्मेदारियों के बारे में समझ भी बढ़ेगी। वे, सामने आयी वित्तीय व्यवस्था के अनुसार अपनी और अपने समाज का हित करने के प्रयास को जारी रखेंगे, जिससे उनका विकास हो सकता है। इन सभी बातों से वे समाज के प्रति जागरुक होकर बदलाव के लिए तैयार हो जाएंगे। सामाजिक तथा वित्तीय बदलावों के लिए किए गए उनके प्रयास ही उन्हें अफलातीन बना देंगें।

भाग-1

मैं, मेरी पहचान, मेरी भावनाएं, मेरे सपने, मेरा लक्ष्य, मेरे दोस्त,मेरी दोस्ती, मेरा पर्यावरण, मेरी क्षमताएँ तथा समूह की भावना

मैं, मेरी पहचान, मेरी भावनाएं, मेरे सपने, मेरा लक्ष्य, मेरे दोस्त,मेरी दोस्ती जैसे पाठों से इस विभाग की शुरुआत होगी। मेरी क्षमताएं तथा मुझमें रहने वाली अच्छी या बुरी आदतों, चीजों को समझकर ,उनमें बदलाव करने की यह शुरुआत रहेगी। नयी सोच, नयी खोज तथा नयी कल्पनाओं से मेरा विकास मुमकिन होगा।इसलिए निर्माण की भावना की अहमियत जानकर मुझे इस तरह सोच की प्रक्रिया को आगे लेकर जाने के लिए इस विभाग से प्रेरणा मिलेगी।

मैं मेरी खोज करते हुए, मेरे माहौल, मेरे पर्यावरण एवं समाज के साथ मेरा रिश्ता किस तरह रहेगा, इसके बारे में भी मुझे मालूम होने का अवसर इससे मिलेगा। परस्पर सहयोग, भाई चारा, प्रागतिक आगे बढ़ने की सोच मुझे जिम्मेदार बनाने के लिए फायदेमंद होगी।

मैं कौन, मेरी पहचान ?

हम समाज में रहते है और हमारी एक पहचान होती है। कोई भी व्यक्ति अपना नाम, गाँव का नाम, आस–पास का माहौल जैसे चीजों से पहचाना जाता है। इसलिए वह एक–दूसरे से मिलता जुलता फिर भी अलग होता है। इस पहचान के साथ किसी भी व्यक्ति के दायित्व का भी मुद्दा जुड़ा होता है तथा यह दायित्व या जिम्मेदारी अपनी अलग–अलग पहचान के तहत अलग–अलग होती है। हमें, अपनी पहचान के साथ आनेवाली जिम्मेदारियों के प्रति सजग रहकर उन्हें दिल से पूरी करने की ख्वाइश रखने की जरुरत है। यदि यह समझ हम अपने भीतर बढाएं, तो ही हम जिम्मेदार व्यक्ति कहलाएंगें।

मैं कौन?	मैं.....
मेरे पिताजी	उनकी/उनका मैं.....
मेरी माँ	उसका/उसकी मैं.....
मेरा बड़ा भाई	उसका/उसकी मैं.....
मेरी बड़ी बहन	उसका/उसकी मैं.....
मेरा छोटा भाई.....	उसका/उसकी मैं.....
मेरी छोटी बहन.....	उसका/उसकी मैं.....
मेरे दादा और दादी.....	उनकी/उनका मैं.....
मेरे चाचा और चाची.....	उनकी/उनका मैं.....
मेरे मामा और मामी.....	उनकी/उनका मैं.....
मेरे पड़ोसी.....	उनकी/उनका मैं.....
मेरी पाठशाला.....	उसका/उसकी मैं.....
मेरे अध्यापक.....	उनकी/उनका मैं.....
मेरा गाँव.....	उसका/उसकी मैं.....
मेरा जिला, मेरा राज्य, मेरा देश.....	उसका/उसकी मैं.....

मैं हूँ कौन ?

मैं हूँ कौन ? और मैं आया कहाँ से ?
मुझे नयी-नयी चीजें सिखनी है,
स्वयं की खोज कर, नए रास्ते अपनाने है,
मेरे जीवन का लक्ष्य, मुझे तय करना है,
इसकी खोज मैं करुंगी,

क्योंकि मैं हूँ अफलातीन.....

मुझे सपने आते है, उज्वल भविष्य के,
मेरे अच्छे जीवन के,
तथा मेरे आस-पास के सुंदर दुनिया के,
मैंने ये सपने पूरे करने का निश्चय किया है,

क्योंकि मैं हूँ अफलातीन.....

आस-पास की दुनिया, मुझे कभी सुंदर दिखती है,
कभी बहुत ही निर्दयी, भयानक वास्तव से मेरा पाला पड़ता है,
लेकिन यह दुनिया मैं बदलूंगी, इसे मैं सुधारुँगीं,

क्योंकि मैं हूँ अफलातीन.....

मुझमें है कुछ अच्छी बातें, कुछ बुरी बातें,
कभी मेरा होता है सम्मान,तो कभी लोग मुझ पर गुस्सा करते है,
मैं खुद को अच्छा बनाकर अच्छी इंसान बनना चाहती हूँ,
इसलिए मैं पूरी कोशिश करुँगी,

क्योंकि मैं हूँ अफलातीन.....

मैं हूँ तुझमें, मैं हूँ उसमें,
मैं हूँ उन सबमें,जो सबके भले के लिए कोशिश करते है,
बदलाव के लिए प्रयास करते है,
दुनिया का निडर होकर सामना करते है,

क्योंकि मैं हूँ अफलातीन.....

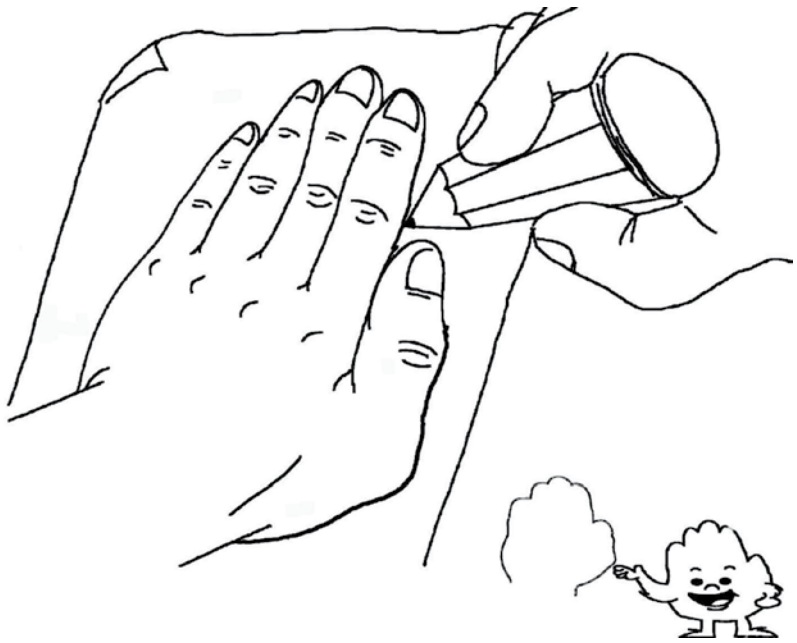

क्या देखना है आपको, अपने अंदर छुपे अफलातीन को ? चलिए, आपका बाँया हाथ आप कागज पर रखिए। अंगूठे को थोड़ा आगे निकालिए। और अपने पंजे की मदद से पेंसिल से एक रेखा बनाइए। उसकी आँखें, नाक निकाले और देखें क्या कुछ नजर आता है ?

क्या आपको दिखाई दिया। आपके भीतर छुपे इस अफलातीन को ? वह है आपकी मुट्ठी में! यदि ध्यान से देखें तो वह आपको जरुर दिखाई देगा। यदि आपको उसे मिलना है तो दोस्तों,

हमें हमारी कुछ आदतों को बदलने की जरुरत है।
हमें सवाल पूछने चाहिए, खोज लेनी चाहिए।
नये–नये विचारों पर सोचना चाहिए, शर्म या डर से हटकर आगे आना चाहिए।
आत्मविश्वास के जरिए बाहर घूमना चाहिए।
तभी जाकर आपका नजरिया बदलेगा,
ज्ञान के भंडार आपके लिए खुल जाएंगे,
चलिए, फिर आप एक निश्चय करें,
चर्चा करे, सोच करें,
खोज लें, विचार–विमर्श करें,
खोज के अनुसार काम करें, जिसे अपनी दुनिया अफलातीन बन जाएगी।।

हमारी भावनाएँ

क्लास में अफलातीन क्लब के बच्चे एक साथ बैठकर चर्चा करें कि, इंसान के चेहरों पर कितने किस्म की भावनाएं दिखाई देती है। ज्यादा से ज्यादा बच्चों को शामिल करने के लिए हम समूह बनाएंगे। हँसी, मजाक, दुख, निराशा, गुस्सा, नाराजगी, जैसे कितनी ही भावनाएं हमारे मन में उठती है। इन्हें यदि आपको चित्र के जरिए बताना है, तो कैसे बताएंगे, इसके बारे में सोचे।

बच्चे समूह बनाकर इन चित्र को पेश करें। इसके बाद बच्चे चर्चा करेंगे, कि इस तरह की अलग– अलग भावनाएं हमारे मन में क्यूँ पैदा होती है?

इस पर विस्तार से चर्चा हो, क्योंकि बच्चे, बूढ़े सब लोग इन वजहों के जिम्मेदार है। कभी–कभी आस–पास का माहौल भी इसके लिए जिम्मेदार होता है, भावनाओं के निर्माण में ।।

चर्चा किए हुए मुद्दों को ध्यान में लेकर, यह बताएं कि भावनाएं हमारे मन का आइना है, लेकिन इन भावनाओं को हम इंसानियत के रिश्ते को तोड़कर बयां नहीं कर सकते। हम इन्हें जताने के लिए दूसरों पर हिंसा का प्रयोग रहीं कर सकते। हमें इन्हें संभलकर दर्शाने का तरीका आना चाहिए।

क्योंकि कई बार हमारी भावनाओं को दर्शानें का मतलब दूसरों के अधिकारों का हनन हो सकता हे।

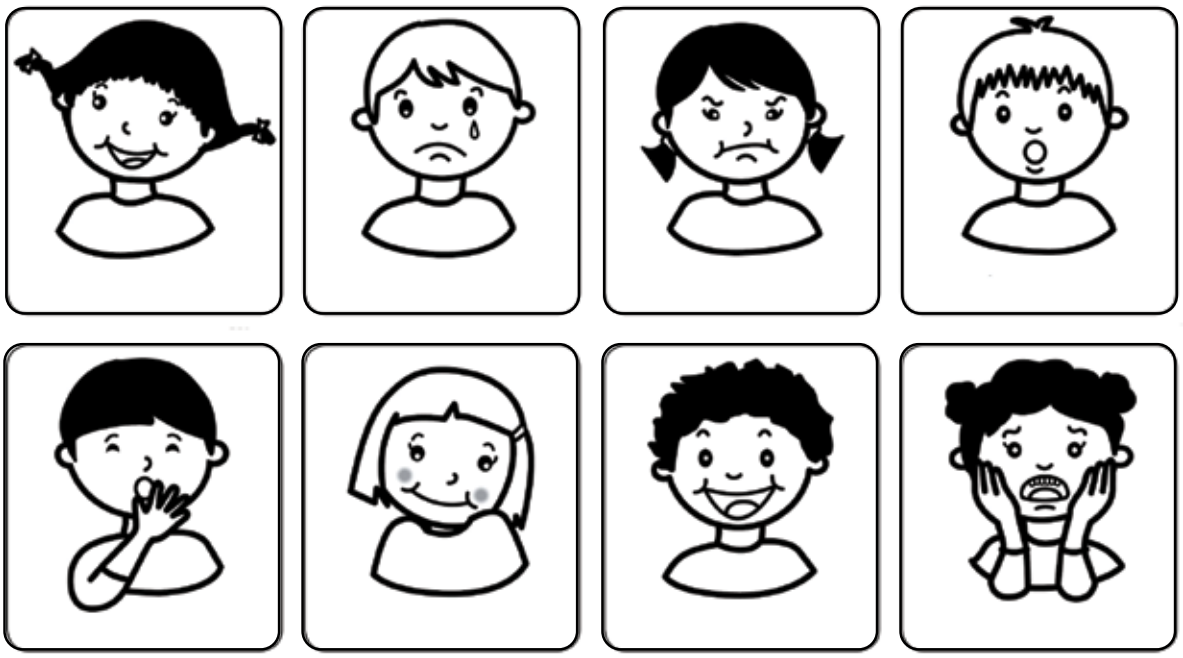

मेरे सपने

अफलातीन क्लब के सचिव तथा अध्यक्ष को यह कार्य करना है। बच्चे हमेशा कोई ना कोई सपना देखते रहते है। कभी वे सपनों से डरते है, तो कभी उन्हें सपनों की दुनिया में सैर करना अच्छा लगता है। इसी सपना को अपने अफलातीन की मदद से साकार करने की कोशिश हम कर सकते है। देखिए कैसे ?

सभी बच्चों को एक गोल करके बैठने के लिए कहिए। सभी को आँखें मँदकर यह कल्पना करनी है कि, वह क्या बनना चाहता है/चाहती है ? क्या मेरा खुद का घर होगा ? क्या मेरे पास पर्याप्त सभी चीजें होंगी ? क्या मैं अपने माँ पिताजी तथा परिवार की देख–भाल करने लायक बनँगा/बनँगी ? पंद्रह मिनटों में यह कार्य समाप्त करके सभी बच्चों को अपने सपनों के बारे में कागज पर लिखना है। यह लिखते समय आगे देखिए बिंदुओं को ध्यान में रखिएः

- अपना सपना पूरा करने के लिए मैं किस तरह की शिक्षा हासिल कर पाउँगी/पाउँगा ?
- अपना सपना पूरा होने में यह चीजें आसानी से उपलब्ध होगी। जैसे,
- अपना सपना पूरा होने में यह मुश्किल आएगी। जैसे,
- अपना सपना पूरा करने के लिए इन चीजों के जरिए मैं मुश्किलों का सामना करुंगा/करुंगी।
- मेरा सपना पूरा करने में मुझे इन लोगों का सहयोग/मार्गदर्शन मिलेगा। जैसे,
- मेरा सपना पूरा करने के लिए मुझे आज से किस तरह की तैयारी करने की जरुरत है ?
- अफलातीन उपक्रम इसमें मुझे किस तरह से मदद कर सकता है ?

हर एक बच्चे अपने सपनों के बारे में लिखने के बाद बताकर अन्य बच्चों की मदद से अपने सपनों की कल्पनाओं को पूरा करना है।

अफलातीन क्लब के बच्चे तालियां बजाकर सभी के सपनों के प्रति सम्मान देंगे तथा इस कार्य के बारे अपने गाँव के अन्य बच्चों को बताएंगे।

भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम जी ने कहा है कि,

सपना वह नहीं,
जो आप नींद में देखते हैं।
वह एक ऐसी चीज है,
जो आपको नींद ही नहीं आने देती।

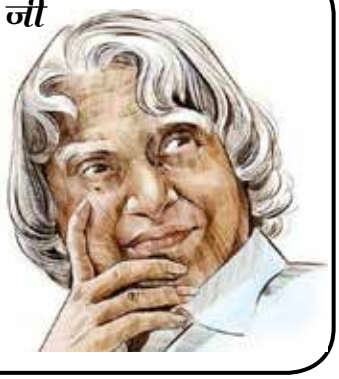

मेरे सपने

तुझमें है ताकत....
तुझमें है हिम्मत,
बनाने की या बिगाड़ने की।
जो तुम्हें चाहिए वो और वो ही,
करके दिखाने की।।
तेरे सपने,तेरी आशाएं,
चढ़ने दे तुम्हे उनका नशा,
बढ़ने दे तुम्हारे कदम उसकी ओर धीरे-धीरे,
लगने दो तुम्हें सपनों की आहट,
हर दिन तुम्हें करने है पूरे पड़ाव,
क्योंकि तुझमें है ताकत।।
कभी तुम्हारी राह हो सकती है मुश्किल,
कदम-कदम रहेगी रुकावटें,
कोई कदम नहीं होगा पूरा,
कभी छुट सकता है, तुम्हारे सपनों का साथ,
तब तुम्हें करनी है हिम्मत,
क्योंकि तुझमें है ताकत...।।
अगर है तुम्हें खुदपर भरोसा,
यदि है तुम्हें अपने सपनों की आशा,
तब एक दिन ऐसा आएगा,
जो तुम्हें ले जाएगा तुम्हारे सपनों की ओर,
वहीं होगी तुम्हारे कुछ बनने की शुरुआत,
क्योंकि तुझमें है ताकत...।।

खरगोश और कछुए की कहानी

आप सबने बचपन में खरगोश और कछुए की कहानी तो सुनी होगी। झूठा आत्मविश्वास तथा आलस की वजह से दौड़ में खरगोश हार गया और अपनी कड़ी मेहनत, लगाव तथा नियमितता की वजह से कछुआ जीत गया। अपनी इच्छा, कड़ी मेहनत, विश्वास तथा प्रयास करने की इच्छा के आधार पर कोई व्यक्ति अपनी मंजिल पा सकता है, यही हमने इस कहानी के जरिए सीखने की कोशिश की। आलस की वजह से हम अपने सफलता से भी हाथ धो बैठते है। यदि

इस कहानी को हम आगे बढ़ाते है, तो क्या होगा इसकी कल्पना करके देखें क्या ?

पहली दौड़ में खरगोश कछुए से हारा था, जिससे उसे बहुत बड़ा सबक मिला। उसने इस पर बहुत सोचा, अपने दृढ़ निश्चय तथा मेहनत से अपना ध्यान वापस अपनी ताकत पर लगाया। एक बार वह अपने मित्र कछुए को मिलने गया और उससे कहा कि, वे फिर से दौड़ लगाएंगे। कछुआ भी तैयार हो गया। दौड़ शुरु हो गई। कछुआ अपने प्राकृतिक गति से चल रहा था, तो दूसरी तरफ खरगोश बड़ी तेजी से दौड़ को जीतने की होड़ रखकर भाग रहा था। खरगोश अब जानता था कि, पहले जैसे आलस फजूल आत्मविश्वास की वजह से उसे हारना नहीं है। उसने अपने लक्ष्य की ओर अपना ध्यान दिया और वह दौड़ जीत भी गया।

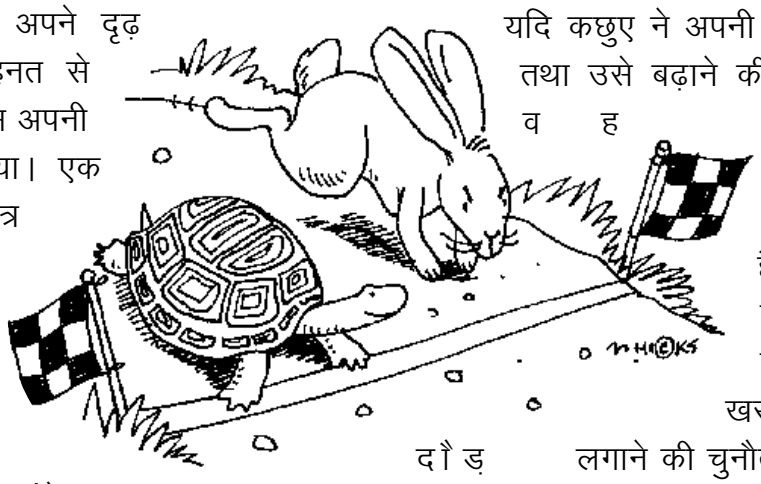

अपनी हार को कछुए ने स्वीकारा तो सही, लेकिन वह भी सोचने लगा कि वह क्यों हार गया। उसे यह ध्यान में आया कि, चाहे कितनी भी मेहनत वह करे, लगन के साथ अपना काम पूरा करने की कोशिश करे, फिर भी जो चीज प्रकृति ने उसे नहीं दी है, उसके साथ कभी कभी मुकाबला नहीं कर सकता। क्योंकि वह दूसरे की ताकत होगी और अपनी कमजोरी। यदि तेजी से भागना, यह खरगोश की ताकत है तो वह जितेगा और कछुआ हारेगा। लेकिन यदि कछुए ने अपनी ताकत को समझा तथा उसे बढ़ाने की कोशिश की, तो वह खरगोश को हरा सकता है और खुद जीत सकता है। यह सोचकर कछुआ बहुत खुश हुआ और उसने खरगोश को वापस दौड़ लगाने की चुनौती दी। उसने कहा कि, दौड़ का रास्ता वह तय करेगा। खरगोश ने मान लिया। उसे लगा चलो वापस कछुए को हराने का मौका मिलेगा। दौड शुरु हो

गई। खरगोश बहुत तेजी से भाग रहा था, उसने कछुए को बहुत पीछे छोड़ा था। लेकिन कुछ समय में वह अचानक रुक गया। उसने देखा कि आगे नदी बह रही है। उसे समझ में नही आ रहा था कि वह उस नदी को कैसे पार करेगा? तब तक कछुआ धीरे–धीरे चलकर खरगोश के पास आ पहुँचा। नदी पार करके यह दौड़ पूरी होने वाली थी। कछुए ने शांति से पानी में छलांग लगायी। खरगोश देखता रह गया और कछुआ नदी के पार जा पहुँचा। वह दौड़ जीत गया। यदि किसी से मुकाबला करना हो तो जरुरी है कि आप पहले अपनी ताकत को समझ लें। यहाँ खरगोश बहुत उदास हो गया। वह भी अपनी हार को लेकर सोचने लग गया। उसे ध्यान में आ गया कि जमीन पर दौड़ना उसकी ताकत है, तथा पानी में तैरना कछुए की ताकत । यदि अपने जैसे जमीन पर दौड़ने वाले के साथ मुकाबला हो तो बात अलग है। इधर कछुए को खरगोश का उदास होना ना गंवारा था। वह खरगोश के पास आया और बोला कि वे दोनों वापस दौड़ लगाएं और दोनों साथ में यह दौड़ जीत जाएं। फिर कछुए ने खरगोश को अपने पीठ पर लिया और वे दोनों नदी पार कर जीत गए। दोनों समय से पहले अपनी मंजिल की तरफ पहुँचे। दोनों को बहुत खुशी हुई। यह खुशी एक–दूसरे को हराने से ज्यादा एक–दूसरे की मदद कर साथ में जीतने की खुशी थी। दोनों को यह ध्यान में आ गया कि यदि मंजिल एक हो, तो अपनी ताकतों को जोड़कर, एक–दूसरे की मदद कर हम मंजिल की ओर बढ़ सकते है। यह दौड़ निराली होगी, तथा इसमें किसी के प्रति ईर्ष्या नही रहेगी। खरगोश और कछुएं ने इस दौड़ से बहुत कुछ सीखा। आपको इससे क्या अनुभव मिलता है ?

- आपको यह समझ में आया होगा कि अपनी हार के बाद खरगोश या कछुए दोनों में से किसी ने हार सच्चे मन से नहीं स्वीकारा। लेकिन उस पर बहुत सोच–विचार किया। अपनी हार की जड़ तक पहुँचने का प्रयास किया।

- अपने अनुभवों से सीखने की कोशिश की तथा अपनी कमजोरियों को समझकर उन्हें अपनी ताकत में बदलने का प्रयास किया। नई दृष्टि अपनायी। नया रास्ता चुना ताकि मंजिल जल्दी हासिल कर सके।

- खरगोश या कछुए ने एक–दूसरे के साथ मुकाबला करने के बजाय एक–दूसरे की मदद कर अपनी मंजिल को पाना ज्यादा महत्वपूर्ण समझा। वहीं आसानी से मंजिल का रास्ता जल्दी भी खत्म हो गया।

- उन्होंने यह जान लिया कि एक–दूसरे को हराने से ज्यादा अच्छा है, सामने आयी मुश्किल से साथ में निपट लें। दूसरों की मदद अपने लिए भी सही साबित होती है।

तोड़ डाले हम, दीवारें अपने मन की

अफलातीन क्लब के सदस्य क्लास में एक बड़े कागज को चिपकाएंगे। क्लब के अध्यक्ष तथा सचिव आगे होकर क्लास के हर एक सदस्य को इस खेल में शामिल करेंगे। इस कागज पर लड़के, लड़कियों को अपनी पसंद के एक प्रसिद्ध व्यक्ति का नाम लिखकर बैठना है।

यह सूची पूरी होने के बाद हर वह व्यक्ति किस काम के लिए प्रसिद्ध है, तथा उसे किस तरह से सम्मानित किया गया है, इसके बारे में जानकारी लेकर चर्चा करें। बाद में हर एक व्यक्ति के धर्म को लेकर चर्चा करें और यह समझने की कोशिश करें की, क्या हम उन लोगों के किसी खास धर्म, जाति के होने की वजह से उन्हें चाहते है, या उनकी काबिलियत, क्षमताओं को देखकर ?

इस तरह हम चर्चा करने की कोशिश करें की किसी भी व्यक्ति का बड़प्पन उनका किसी एक धर्म का होने की वजह से नही बनता, बल्की उनके चरित्र, लगाव, प्रयासों एवम् नजरियों की वजह से बनता है। लोगों को उनके धर्मो की पहचान के परे देखने का दृष्टिकोण अपनाने की जरुरत है, इसपर क्लब में चर्चा करें।

इसके बाद हर एक व्यक्ति के आस–पास ईटों के दीवार की कल्पना करेंगे, तो उस व्यक्ति को देखना भी मुश्किल हो जाएगा क्योंकि, व्यक्ति को यदि हम जाति, धर्म, लिंग, रंग, वर्ग जैसे भेदों में बंद करेंगे तो, उनकी असली काबिलियत बंद हो जाएगी, और वह खुले मन से इन्सानियत का एहसास नही ले पाएगा।

चर्चा से यह समझ में आता है कि कोई भी व्यक्ति जन्म से अपने साथ किसी तरह का धर्म, जाति का पहचान लेकर नहीं आता, वह व्यक्ति होता है, इन्सान होता है।

क्या हम लोगों को उनके इन्सान होने की पहचान के साथ स्वीकार करेंगे? इस पर बहस करें ।

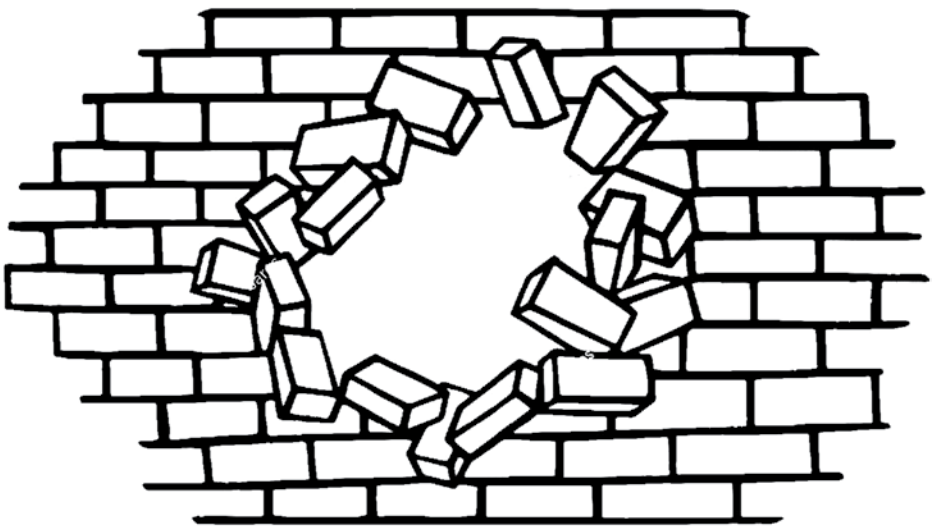

प्रकृति की देन, हमारे संसाधन !

अफलातीन क्लब के सदस्य अपने दो समूह बनाएंगे। दोनों समूह समय निश्चित करेंगे। एक समूह इन्सान के द्वारा बनायी चीजों की सूची तैयार करेगा, तो दुसरा समूह प्रकृति में उपलब्ध चीजों की सूची तैयार करेगा।

दोनों समूह अपनी सूची एक दूसरे को दिखाऐगें ताकि वह दोंनों सूचियों में बचे हुए मुद्दों को डाल कर वें उसे पूरा कर सकते हैं। पहला समूह जिसने इन्सान के द्वारा बनाए हुए संसाधनों की सूची तैयार की है, वह बताएगा की यदि यह संसाधन खत्म हो गए तो क्या उसके लिए कोई विकल्प है ? यही सवाल दुसरे समूह के सदस्यों को भी पुछेंगे। इन चीजों के पुननिर्माण में कौन–कौन सी चीजें जरुरी होती है ? मानव निर्मित सभी संसाधनों के स्रोत प्रकृति पर निर्भर है। इससे बच्चे यह समझ पाएंगे की प्रकृति के संसाधनों का आमतौर पर पुननिर्माण हो सकता है, लेकिन कुछ चीजें ऐसी है, जो खत्म हुई तो दोबारा बनायी नही जा सकती।

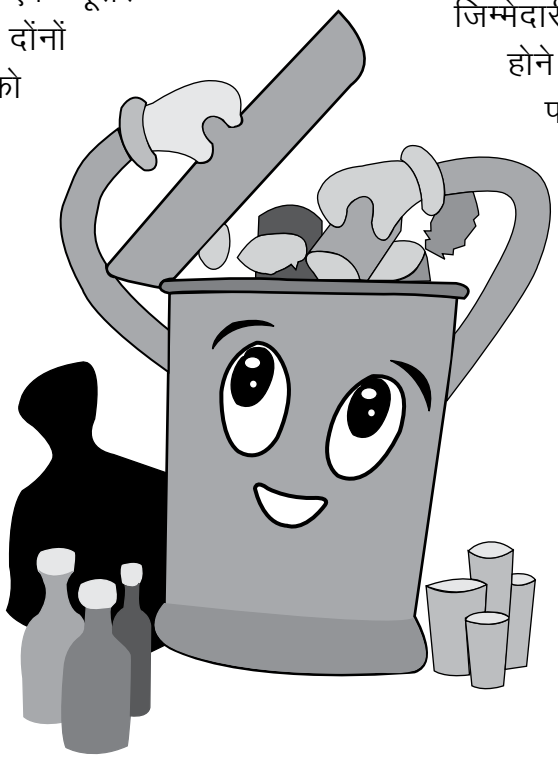

जरुरी है कि, इन्सान अपनी जरुरत के हिसाब से चीजों का इस्तेमाल करें और आनेवाली पिढ़ी के लिए बचाकर रखने की सोच रखें। प्रकृति हमेशा सह–जीवन दर्शाता है, यह हमे बचपन में भोजन की श्रृंखला को समझने के वक्त पता चल गया था। अब यह हमारी जिम्मेदारी है कि प्रकृति की हानि होने से उसे बचाए। जलवायु परिवर्तन के परिणामों को हम पिछले कई सालों से देख रहे हैं। प्रकृति के चक्र को बदलते हुए तथा उससे हमारे पानी, हवा में होते हुए बदलावों का गहरा असर हमारी जिंदगी पर होता हुआ देख हम चिंतित हो रहे है। एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते हम इस पर रोक लगाने के लिए अवश्य कदम उठा सकते हैं। आप अपने अफलातीन क्लब के जरिए ऐसे गंभीर मामलों पर आपकी क्या भूमिका रहेगी, तथा आपका क्या योगदान रहेगा, इस पर सोच विमर्श करें ? आप इससे कुछ कर दिखाने की हिम्मत रखते हैं।

भाग-2

बच्चों के अधिकार और जिम्मेदारियां, बच्चों की समस्याएं, वजह तथा, विकल्प

हमारे अधिकारों को समझकर उनसे जुड़ी जिम्मेदारियों के प्रति सतर्क रहने की जरूरत को इस पाठ में दर्शाया गया है। जब हमारे अधिकार हमसे छीने जाते हैं, तब हमारी क्या भूमिका रहनी चाहिए, हमें क्या करना चाहिए इसके बारे में यहां सोचने का मौका मिलता है। कन्या भ्रूण हत्या, बाल–विवाह तथा बालमजदूरी जैसी समस्यायों के बारे में सोच लिया जाए; तो क्या करना है, इसके बारे में स्पष्टता आती है क्योंकि ये सवाल बच्चों के भविष्य से जुड़े है। साथ में जब, बच्चों की सुरक्षा का सवाल सामने आता है, तो बच्चों के पास किस तरह की जानकारी मौजूद होनी चाहिए, इसके बारे में भी अवश्य चर्चा की गयी है। (लैंगिक भेदों को पार कर लड़का और लड़की को समान मानकर चलने की आवश्यकता को भी इस पाठ में दर्शाया गया है।)

हमारी रशीदा, हमारा जॉन

आप यह तो जानते ही है कि, हर बच्चों के चार बुनियादी अधिकार होते है। इन अधिकारों की सुरक्षा उसे इसी समाज, माहौल, माता–पिता तथा सरकार की तरफ से मिलती रहती है, और मिलनी चाहिए। इसलिए इन अधिकारों को निश्चित करने की जिम्मेदारी हर एक पर आती है। यदि ऐसी स्थिति है, तो भी हम यह देखते है की, कई सारे ऐसे बच्चे भी है, जिनके बुनियादी अधिकारों का हनन हमेशा होता रहता है। उनके साथ बुरा बर्ताव किया जाता है। इसीसे बाल–विवाह, बाल मजदूरी जैसी समस्याओं का निर्माण होता है। इसके आगे दिए हुए सत्र में आपको बच्चों को सताने वाली कुछ समस्याओं के बारे में बताया गया है। इससे देखिए क्या आप उनका समाधान कर सकते है ? इससे आपको कई नयी चीजों की जानकारी भी हो सकती है। कैसे ? आप भी इसी तरह किसी समस्या की पहल करने की कोशिश कर सकते है।

समस्या
13–18 आयु के लड़कियों का स्कूल में न आना

दायरा
- गाँवों, और शहरों में यह पायी जाती है।
- अधिकतर लड़कियों कि संख्या

वजह
- लड़कियों की बढ़ती उम्र, बाल–विवाह
- रास्ते में होने वाली छेडखानी, गुंडों से सताया जाना
- स्कूलों में शौचालय का न होना /शौचालय साफ सुथरा न होना,
- छोटे भाई, बहनों को संभालने के लिए स्कूल में माता–पिता का न आना,
- शिक्षा की अहमियत को न समझना

विकल्प
- अभिभावकों से बातचीत
- स्कूलों में शौचालय होना एवं शौचालय को साफ रखना
- बदसलूकी करने वाले व्यक्तियों के विरुद्ध उचित कार्यवायी
- छोटे भाई बहनों के लिए पालनाघर का प्रावधान
- बाल–विवाह की रोकथाम के लिए जागरूकता फैलाना

कौन से अधिकारों का हनन होता है?
- जीने का अधिकार।
- विकास का अधिकार।
- सुरक्षा का अधिकार।
- सहभागिता का अधिकार।

परिणाम
- मूलभूत सुविधाएँ तथा, पहचान ना मिलना।
- शिक्षा, खेलकूद, पौष्टिक आहार, मनोरंजन, आदि से दूरी।
- बाल–विवाह, समाज से प्राप्त सुरक्षा का अभाव।
- निर्णय में भागीदारी का अवसर न मिलना।

बाल अधिकारों का चित्र

आपकी बुनियादी जरूरतों एवम् इच्छाओं की सूची आगे दी हुई है। हमारे आसपास कई ऐसी चीजें होती है, जो दिखने में बहुत सुंदर लगती है, रंग तथा स्वाद से भी बढ़िया होती है। लेकिन आपको यह तय करना होता है कि इससे कौन सी बुनियादी जरूरत पूरा होगी ? यदि हमारी जरूरतों को पूरा किया गया तो ही, हम अपनी पसंद को पूरा कर पाएंगे। अगर हमारी जरूरतें पुरी नहीं हुई, तो हम किन चीजों को अहमियत देंगे ? बताइए।

खाना	चादर/बिस्तर	पोषक आहार	साफ सुथरा पानी
खर्चे के लिए पैसे	किसी भी भेद से सुरक्षा	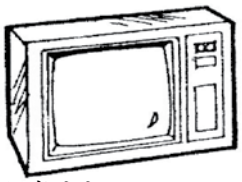 रेडियों/टीवी	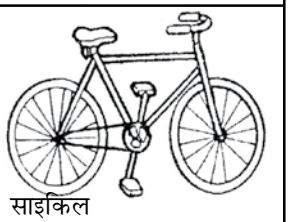 साइकिल
पिकनिक	शिक्षा	अपनी राय बताना तथा दुसरों की राय समझना।	बिमारी से देखेभाल
मोबाईल	खेल के मैदान तथा मनोरंजन की जगह	उचित निवास	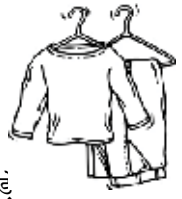 कपड़े
खुद का कम्प्युटर	डिजायनर कपडे	धर्म का पालन करने का मौका	हिंसा तथा नकारेपन से सुरक्षा

बाल-विवाहित लड़की के जीवन का एक दिन

हमारे आस–पास के माहौल में, कई बच्चे हमें कुछ ना कुछ काम करते दिखाई देते है। क्या यह सब बच्चे पढ़ते लिखते है ? क्या वे स्कूल जाते है ? ऐसी कौन सी समस्याएँ है, जो उन्हे पैसे कमाने पर मजबूर कर रही है? ऐसा हमें हमेशा लगता है।

हमें अपने अधिकारों को कैसे हासिल करना है, इसके बारे में जानकारी है। लेकिन क्या हम इन बच्चों के बारे में भी उतनी जिम्मेदारी से सोच रहे है ? आगे दिए हुए कार्य से, हम एक बाल मजदूर की जिंदगी में अकेले दिन की क्या अहमियत होती है, यह जानने की कोशिश करेंगे।

कार्य के लिए जरुरी प्रश्नावली :-

1. छात्र का नाम :.....
2. विवाहित बच्ची का नाम :.....
3. वह रोज कितने बजे उठती है ? .....
4. घर में क्या–क्या काम करती/करता है? जैसे, वर्तन मांजना, बच्चे का नहलाना, खाना पकाना, साफ सफाई करना, पानी भरना है ? :.....
5. खाने का समय कब होता है? खाने में क्या मिलता है ? .....
6. क्या उसे घर का काम पसंद है? .....
7. दोपहर को क्या वह विश्राम करता/करती है ?:.....
8. शाम को क्या वह खेलता/खेलती है ?.....
9. क्या उसे आगे पढ़ने की इच्छा है ? :.....
10. क्या उसे परिवार से पढ़ने की इजाजत है।.....
11. रात में कब खाना खाती है ? उसे क्या खाने को मिलता है ?:.....
12. वह कितने बजे सोती/सोता है ? :.....
13. अगर वह बीमार है, तो उसकी देख–भाल कौन करता/करती है ? कैसे ? :.....
14. बाल–विवाह करने की वजह क्या है ? :.....
15. अपनी जरुरत के समान किससे मंगवाती है।.....
16. वह आगे पढ़ के क्या बनना चाहती है।.....

भाग-3

वित्त शिक्षा, जमा-खर्च, निवेश, अनुमानित बजट, बैंक का कामकाज, जिम्मेदार ग्राहक

नियोजन, वित्त शिक्षा, जमाखर्च, निवेश, बैंक का कामकाज, बजट एवम् जिम्मेदार ग्राहक जैसी संकल्पनाओं पर इस विभाग में विस्तार से बातें की गयी है। वित्तीय शिक्षा यह पहला पायदान है, जिसमें अपने पैसों का इस्तेमाल कैसे किया जाए, इसके बारें में बच्चों को सोचने का मौका मिलता है। हम कर्जे के बोझ में न दबे, अचानक आनेवाली चुनौतियों में हमारी स्थिति से हम विवश न हो जाए, तथा हमें वित्तीय शिक्षा की आदत लगे, इस सोच से बातें करने का मौका इससे मिलेगा। हमारी सही और बुनियादी जरुरतों को ध्यान में लेकर खुद को जिम्मेदार ग्राहक कैसे बना सकते है, इसके बारे में विचार विमर्श करने के लिए यहाँ मौका मिल सकता है।

पैसों का खेल

इस सत्र में, आपको मिली हुई आय से आपका खर्चा या व्यय कैसे और कितना होता है, इसके बारे में जानकारी मिलेगी। इस सत्र से हम अपने साथ दुसरों की मदद भी किस तरह कर सकते है, इसके बारे में भी जानने का मौका मिलेगा। देखिए क्या यह आपके लिए मददगार साबित होता है ? हमारे परिवार में माता–पिता घर का खर्चा कैसे चलाते होंगें, इसकी झलक हमें इस कार्य से मिलेगी। नियमित खर्च, बचत सामाजिक योगदान तथा हमेशा आनेवाली परेशानियों से रस्ता निकलते हुए वह महिने की आमदनी से अपना घर कैसे चलाते है, यह इस कार्य से आपके समझ में आ सकता है। इस पूरे खेल में आपके घर के लिए आप किस तरह से भूमिका निभा सकते है, यह भी अफलातीन क्लब में बहस कर पता चल सकता है।

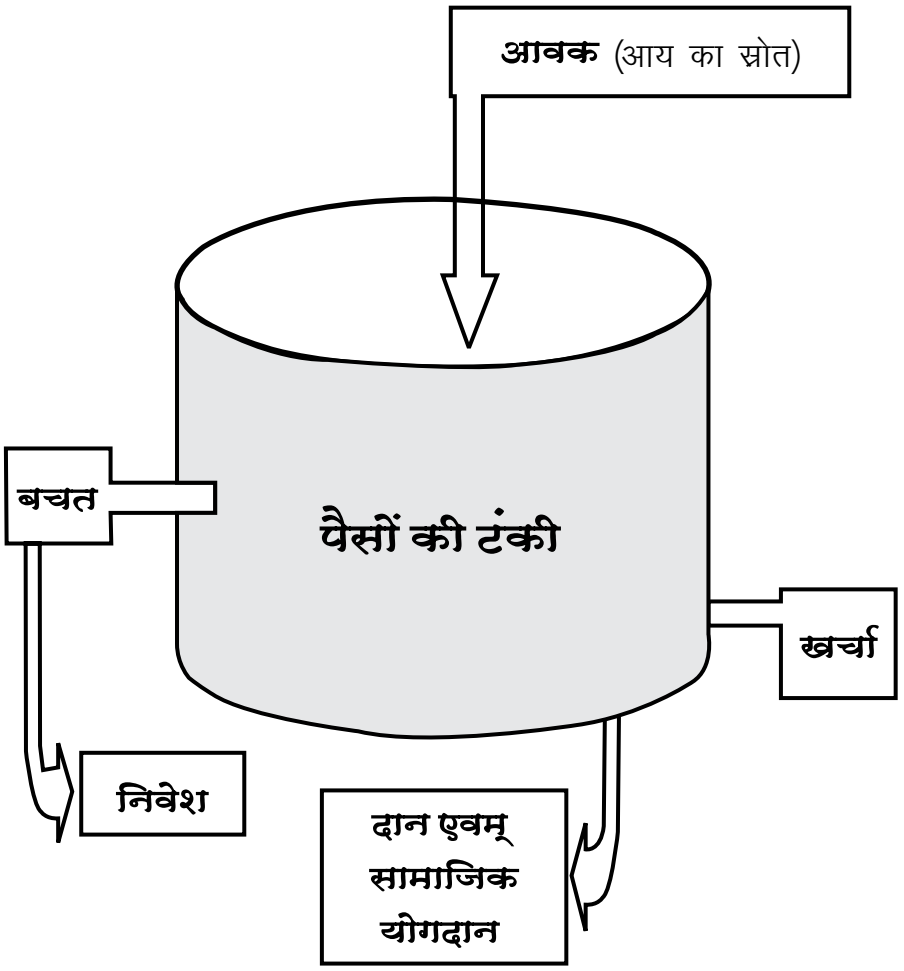

बचत के विभिन्न रास्ते

हमारे पास जो पर्याप्त संसाधन है, इन्हें जानकर हम कौन–कौन से संसाधनों को बचाए रख सकते है ? कौन से संसाधन हम बढ़ा सकते है ? इसको लेकर हम एक खेल खेलने वाले है। देखिए आपको इससे कुछ जानकारी मिलती है ?

हमें अपने अफलातीन खजाने तक पहुँचना है, तो देखिए रास्ते में अलग अलग चीजें मिलेंगी, जिनकी हम बचत कर सकते है। इन चीजों के बारे में पता लगाने के बाद ही आप आगे जाकर खजाने को हासिल कर सकते है। हर एक पड़ाव पर हमें यह पता चलता है कि, हम खर्च किस लिए करते है, तथा हमारी बचत कैसे बढ़ती है। आप अफलातीन क्लब में इसपर चर्चा करें कि, आप कौनसी चीजों की बचत किस तरह से कर सकते है।

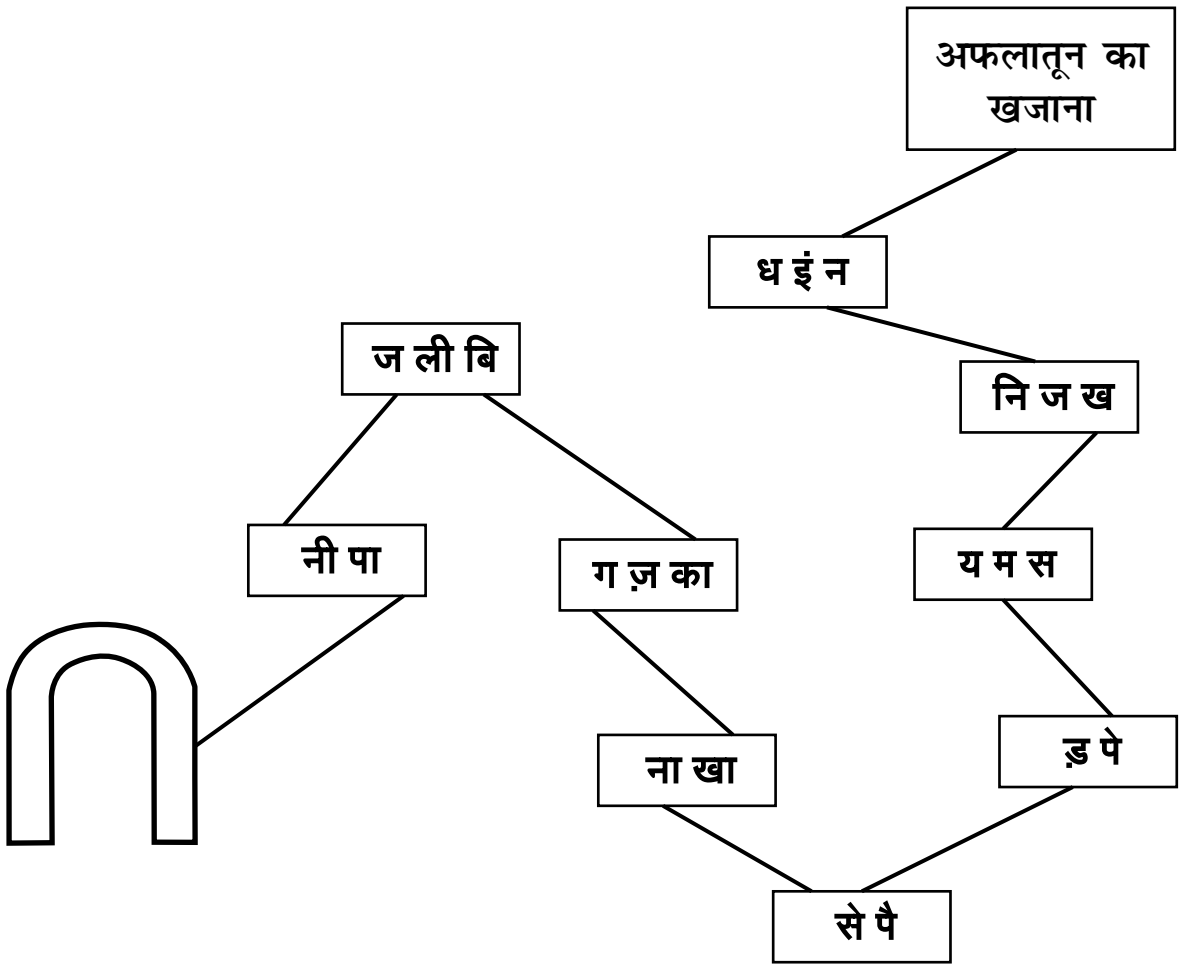

सरल ब्याज और चक्रवृद्धि ब्याज

हमें गणित विषय आसान न लगने की वजह से हम ब्याज से जुड़े किसी भी सवालों का जवाब नहीं दे सकते। इसमें दिखने वाले सवाल उतने आसान नहीं होते, जितने दिखते है। लेकिन यदि हम इन सवालों को समझ ले, तो बात और है। साथ ही में यह ब्याज के उदाहरण हमें बचत के रास्तों तक लेकर जा सकते है। देखिए तो क्या इससे आपको कुछ फायदा हो सकता है ? अफलातिन क्लब में इस पर सोच विमर्श कर नीचे दिए हुए सवालों को समझने कि कोशिश किजिए।

ब्याज = मूलधन x (ब्याज दर/100) x साल

साथ में आपको यह भी पता है की चक्रवृद्धि ब्याज निकालते समय मूलधन हर साल बदलता है।

मूलधन = समय x ब्याज x दर/100

रिया ने सरल ब्याज से 100/– रुपये पाँच साल के लिए निवेश में डाले और मिहिर ने 100/–रुपये 5 साल के लिए चक्रवृद्धि ब्याज से निवेश में डाले। दोनों को 10% ब्याज मिलेगा। किसको ब्याज की ज्यादा रकम मिली ?

सरल ब्याज				
रकम/मूलधन	**समय/वर्ष**	**ह. स. द. शे.**	**ब्याज का गणित**	**ब्याज**
1000	1 साल	10%	1000 x (10/100) x 1	100
1000	2 साल	10%	1000 x (10/100) x 2	100
1000	3 साल	10%	1000 x (10/100) x 3	100
1000	4 साल	10%	1000 x (10/100) x 4	100
1000	5 साल	10%	1000 x (10/100) x 5	100
			कुल ब्याज	500

चक्रवृद्धि ब्याज				
समय	**ह. स. द. शे.**	**रकम/मूलधन**	**ब्याज**	**ब्याज**
1 साल	10%	1000	1000 x (10/100) x 1	100
2 साल	10%	1000+100 = 1100	1100 x (10/100) x 2	110
3 साल	10%	1100 + 110 = 1210	1210 x (10/100) x 3	121
4 साल	10%	1210 + 121 = 1331	1335 x (10/100) x 4	133.1
5 साल	10%	1331 + 133.1 = 1464.1	1464 x (10/100) x 5	146.4
			कुल ब्याज	610.5

अभ्यास

1. यदि सोनू 100 रुपये पाँच साल के लिए 10 प्रतिशत ब्याज से रखे तो सरल ब्याज के अनुसार उसके पैसे ..... हो जाएंगे, यदि चक्रवृद्धि ब्याज मिला तो उसके पैसे ..... हो जाएंगे।

2. रानी और रिया ने 500 रुपया 2 साल के लिए 5 प्रतिशत ब्याज से रखे, उन्हे पता नही की इस पर सरल ब्याज मिलेगा या चक्रवृद्धि ब्याज। यदि ब्याज मिला, तो उनके पैसे..... ... हो जाएंगे, यदि चक्रवृद्धि ब्याज मिला उनके पैसे .....हो जाएंगे।

3. आशा ने 5 प्रतिशत के दर से 1000 रु० तीन साल के लिए चक्रवृद्धि ब्याज पर मोनू को उधार दिया तो 3 वर्ष के बाद आशा को कितना रकम मिलेगा।

4. अंजू ने 300 रु० मंजू से 10 प्रतिशत ब्याज दर पर 2 वर्ष के लिए उधार लिया। चक्रवृद्धि ब्याज कि दर से 2 वर्ष के बाद अंजू को कितने पैसे लौटाना पड़ेंगा।

मेरा अनुमानित बजट

हम जैसे–जैसे बड़े होते जाते है, वैसे हमें अपनी आमदनी तथा खर्चे का नियोजन करने की क्षमता को बढ़ाना पड़ेगा। हर महीने मिलने वाले पैसों में से खर्चे को निकालकर पैसे बचाने के तरीकों को अपनाना होगा। कहां से कैसे पैसे बचा सकते है, इसके बारे में सतर्क रहना होगा। तब ही जाकर हम पैसे बचा सकते है। इसकी जानकारी मिलने के लिए आगे दिया हुआ कार्य हमें मदद कर सकता है।

अनुमानित बजट : अनुमानित बजट का मतलब संभावित आय/जमा (मिलकियत या आनेवाले पैसे) और उसका समय में होने वाले संभावित खर्चे का विश्लेषण

बाकीः संभावित आय से संभाव्य खर्चे को काटकर रहने वाली बाकी रकम

नुकसान का अनुमानित बजट : जिस अनुमानित बजट में आय से खर्चा ज्यादा होता है, जिससे बाकी नुकसान होता है।

फायदे का अनुमानित बजट : जिस अनुमानित बजट में आय से खर्चा कम होता है, जिससे बाकी फायदा होता है।

अनुमानित बजट

समयः 1 जनवरी से 31 जनवरी 2017

अनु	विश्लेषण	रकम (रु)
1	मासिक आय	3000/–
2	बैंक का ब्याज	300/–
3	रद्दी बेचकर मिला पैसा	200/–
4	दोस्त को दिया हुआ उधार पैसा वापस मिला	300/–
	कुल आय/जमा	3800/–
1	घर का किराया	400/–
2	बिजली का बिल	200/–
3	पानी का बिल	200/–
4	मोबाईल का बिल	200/–
5	घर का किराना माल का खर्चा	1000/–
6	दुध का बिल	200/–
7	वर्त्तमान पेपर बिल	200/–
8	स्कूल की फीस	100/–
	कुल व्यय/खर्चा	2500/–
	बाकी रु०	1300/–

उपर दिया हुआ यह अनुमानित बजट यह पैसे बचाने वाला अनुमानित बजट है।

पारिवारिक अनुमानित बजट

1	गणित कार्य बही	रु. 50/–
2	कंपास	रु. 20/–
3	रंगीन कागज	रु. 20/–
4	रंग की पेटी	रु. 50/–
5	चित्रकला परीक्षा फीस	रु. 200/–
6	एन. टी. एल. परीक्षा	रु. 100/–
7	इतिहास किताब	रु. 20/–
8	हिंदी गाईड	रु. 20/–
9	कार्यानुभव का सामान	रु. 50/–
10	अंग्रेजी निबंध की किताब	रु. 50/–
11	अंग्रेजी व्याकरण की किताब	रु. 50/–
12	खेल का सामान	रु. 200/–
13	अध्याय फीस	रु. 200/–
14	क्लास फीस	रु. 300/–
15	मेला टिकट	रु. 20/–
16	सायबर कॅफे का खर्च	रु. 50/–
17	नये जूते	रु. 100/–
18	पैसे का पाकीट	रु. 20/–
19	की चैन	रु. 20/–
20	कंघी	रु. 10/–
21	पाउडर	रु. 30/–
22	रुमाल	रु. 20/–
23	कहानी की किताब	रु. 50/–
24	पटाखों का खर्च	रु. 300/–

25	कंचे	रु. 10/–
26	टोपी	रु. 20/–
27	दोस्त को तोहफा	रु. 50/–
28	अध्यापक को तोहफा	रु. 50/–
29	समोसा	रु. 50/–
30	घड़ी	रु. 100/–
31	चॉकलेट	रु. 10/–
32	स्नैक्स	रु. 20/–
33	शरबत/ठंडा	रु. 20/–
34	दवाई का खर्चा	रु. 300/–
35	डॉक्टर की फीस	रु. 150/–
36	साबून/पेस्ट	रु. 50/–
37	चावल	रु.150/–
38	सब्जियाँ	रु. 50/–
39	दाल	रु. 300/–
40	मसाला	रु. 50/–
41	गैस सिलेंडर	रु. 500/–
42	बिजली का बिल	रु. 120/–
43	मोबाईल का बिल	रु. 200/–
44	कपड़ों की इस्त्री	रु. 50/–
45	पेपर का बिल	रु. 100/–
46	स्कूल की फीस	रु. 200/–
47	सफर का खर्चा	रु. 100/–
48	त्योहार का बिल	रु. 100/–

हमारा बैंक

बैंक में खाता खोलना आजकल बहुत ही असान हो गया है। रिर्जव बैंक द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार भारतीय नागरीक तथा 10 साल या उससे अधिक उम्र के सभी बच्चे अपना बचत बैंक खाता खोल सकते है। इससे उन्हें माता–पिता के द्वारा बिस्कुट, चॉकलेट खरीदने के लिए मिलनेवाले पैसों को बचाकर वें अपने खाते में डाल सकते हैं और जरुरत के समय उन्हें इस्तेमाल कर सकते हैं। भविष्य में पैसे बढ़ाने के अलग विकल्पों के बारे में भी यहां जानकारी मिलेगी। देखिए तो क्या यह आपको पसंद आती है ?

1. बैंक का खाता खोलने के लिए उम्र की मर्यादा नहीं रहती। यदि बच्चे 18 साल की उम्र से कम है, तो वें अपने माता–पिता के साथ अपना खाता खोल सकते है। अब रिर्जव बैंक ने यह निर्देश दिया है कि 10 साल की उम्र के बच्चों के अलग से खाता खोला जा सकता है, जिससे बच्चों बचपन से बचत कि आदत लग सकती है। बैंक खाता खोलने के लिए एक फोटो जन्म प्रमाण पत्र/स्कूल दाखिला पत्र, रहने के घर का जैसे राशन कार्ड/बिजली का बिल/टेलिफोन का बिल/ पासपोर्ट/ पैनकार्ड/आधार कार्ड इन कागजातों की जरुर होती है। खाता खोलने के लिए एक फार्म भरना जरुरी होता है।

2. वर्ष 2014 में भारत सरकार ने जनधन योजना कार्यान्वित की है। जिससे गरीब तबकों के लोगों का बिना किसी पैसों के बैंक में खाता खोलने का फायदा मिल गया है। यदि किसी परिवार के पास बैंक खाता खोलने के लिए पर्याप्त कागजात नहीं है, तब भी उस परिवार के लोग किसी भी बैंक मे जाकर जनधन योजना के तहत शून्य राशि पर अपना बचत खाता खोल सकते है। इससे उन्हें पासबुक तथा एटीएम कार्ड भी मिलता है। इस योजना से लखों लोगों को बैक के कारोबार की जानकारी हुई है।

साथ ही पैसों की बचत करने का सुरक्षित माध्यम भी मिला है।

3. खाता खोलने के पश्चात्, आपको खाता नंबर मिलेगा। हर एक खातेदार को पासबुक और एक चेकबुक दिया जाता है। पासबुक में आपके पूरे व्यवहारों का ब्योरा मिलता है। तथा चेकबुक में दिए हुए चेक के जरिए आप दुसरों को पैसे दे सकते हो या खाते से पैसे निकाल भी सकते हो। आप के खाते में हुए व्यवहारों का पंजीकरण पासबुक में बैंक की मदद से किया जाता है। इसलिए जब भी आप बैंक में किसी कारण वश जाते है, तब आपके पासबुक का नियामित रुप से नवीनीकरण करें।

अगर आपके पिताजी कुछ काम के लिए तहसिल गए है, और वहां उन्हें पैसों की जरुरत पड़ती है, तब वह क्या करते है? किसी के हाथों चिट्ठी भेजकर वें पैसे मंगवाते है। उसी तरह हम, अपने लिए या दुसरों को देने के लिए, अपने खाते से पैसे निकालेंगे तो आपको बैंक को एक चिट्ठी देनी पड़ेगी, जिसमें यह पैसे किसे, कितने देने है, इसकी जानकारी होती है। इसी चिट्ठी को सामान्य रुप से चेक कहते है। ये चेक छपे हुए कागज रहते है, जिस पर आपका खाता नम्बर, बैंक का विवरण होता है। जिस व्यक्ति को आपको पैसे देने है, उसका नाम, (यदि यह पैसा आपको चाहिए तो सेल्फ यह शब्द लिखना जरुरी है), तारीख तथा रकम का विवरण देना जरुरी है। यदि चेक पर आप के हस्ताक्षर नहीं रहेंगे, तो इस चेक का कोई मतलब नहीं बनता। चित्र की तरह अगर आप चेक के बाईं तरफ दो रेखाएं बनाकर उसमें आप एकाऊंट पेयी लिखोंगें, तो जिनका नाम चेकपर होगा, उन्हीं के खाते पर पैसा जमा होता है। यह चेक जिसके नाम से दिया है, उस व्यक्ति के नाम से जिस भी बैंक में उसका खाता होगा, उस बैक

की किसी भी शाखा में जमा हो सकता है। जिस चेक पर दो रेखाएं नहीं दी होती, उस चेक को बेअरर चेक कहा जाता है और जिस व्यक्ति के नाम से वह चेक है, उसे खुद अपने बैंक मे जाकर जमा करके पैसे निकालने पड़ते है। समझने के लिए इस चेक का एक नमुना बाद में दिया हुआ है।

4. बैंक खाते कितने तरह के होते है ?

कुछ लोग व्यापार करते है, किसी का दुकान होता है, ऐसे लोगों के लिए बार–बार पैसे कि लेन–देन जरुरी होती है ऐसे लोगों के खाते को चालू खाता कहा जाता है। इस खाते में जमा रकम पर ब्याज नहीं मिलता।

कुछ लोग बैंक से पैसा निकालने तथा रखने का काम कभी–कभी करते है। उनके बैंक खाते में रखे पैसों पर ब्याज भी मिलता है। इस खाते को बचत खाता कहा जाता है।

कुछ लोग निश्चित समय के अवधी के लिए कुछ राशि जैसे 1 या 2 साल के लिए बैंक में जमा करते है। इसे सावधि जमा राशि कहा जाता है। इसमें ब्याज ज्यादा मिलता है।

कुछ लोग हर महिने में कुछ राशि बैंक में 2 या 3 साल के लिए रखते है, इसे आवर्ती खाता कहते है। इसमें भी ब्याज ज्यादा मिलता है। अभी आप बताइऐ की, आपको यदि बैंक में खाता खोलना हो, तो कौनसा खाता आप चाहेंगे ?

5. बैंक से पैसे निकलने के लिए छपी हुई विड्रावल स्लीप होती है तथा डिपॉजिट स्लीप होती है, पैसे या चेक को बैंक खाते मे डालने के लिए यह फार्म बैंक में उपलब्ध होते है। उसे भरकर आप या तो पैसा निकाल सकते है। या जमा कर सकते है। बैंक के कर्मचारी अपने दिए हुए फॉर्म की एक कॉपी मुहर मारकर आपको वापस देते है। यह रिसिट होती है, आपके व्यवहार की । इसे जब तक आपका व्यवहार पूरा न हो तब तक, संभाल कर रखना जरुरी होती है। विड्रावल तथा डिपॉजिट स्लीप में आपको आगे दी हुई जानकारी भरनी जरुरी है।

डिपॉजिट स्लीप

1. तारीख
2. जिस बैंक में पैसे या चेक जमा करना हो, उस बैंक का खाता नंबर तथा खातेदार का नाम
3. रकम (अंकों में तथा अक्षरो में)
4. पैसे भरने के वक्त हर एक नोट की जानकारी तथा उसकी संख्या जैसे, पाँच सौं के कितने नोट, सौ रुपये के कितने नोट, इत्यादि
5. **चेक भरते समय,** चेक का नंबर, जिस बैंक का चेक है, उसका नाम, पता,
6. पैसे/चेक भरनेवाले का हस्ताक्षर

विड्रावल स्लीप

1. तारीख
2. जिस खाते से पैसे निकालने है, उस खाते का नंबर तथा खातेदार का नाम
3. रकम (अंको में तथा अक्षरों में)
4. जिसके खाते से पैसे निकालने है, उसका हस्ताक्षर, आपके गाँव में अगर बैंक नहीं है, तो नाराज मत होना। पड़ोस के पोस्ट ऑफिस में जाइए। पोस्ट ऑफिस भी बैंक चलाता है। इसे पोस्टल बैंकिंग कहा जाता है। आप भी यहां खाता खोल सकते है। तो नजदिकी पोस्ट ऑफिस में जाकर पोस्टल बैंकिंग की ज्यादा जानकारी लिजिए।

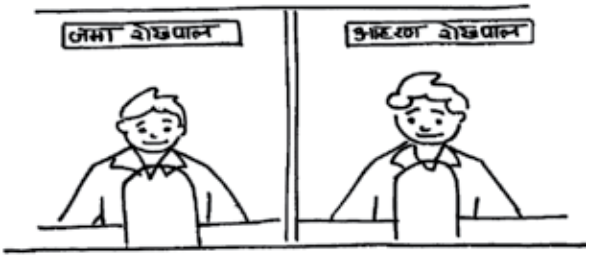

हमारा बैंक

गाँव के बच्चे ने नीचे दिए हुए चेक, विड्रावल स्लीप, डिपॉजिट स्लीप भरें हैं। लेकिन इसमें कुछ कमियाँ है। क्या आप बता सकते हैं, क्या कमी रही है ?

भारतीय स्टेट बैंक
State Bank Of India

(60351) CHEMBUR, MUMBAI
SHREE SIDDHIVINAYAK MAHIMA, 1 ST FLOOR, PLOT-1,
IFC Code: SBIN 0000603833

केवल ३ महिने के लिए चैक VALID FOR 3 MONTHS ONLY
D D M M Y Y Y Y

PAY संदिप शिर्के को या उनके आदेश पर OR IRDER

रुपये RUPEES पचास हजार पचपन रुपये

अदा करें ₹ 50,055/-

खा. सं Ac/No 00951232511651

VALID FOR Rs. 10.000.000.00& UNDER

Prefix
04382000100

MULTI-CITY CHEQUE Payable at Par at All Branches of SBI

Please sign above

||214747|| 400002220 : 004994 31

A/c Payee

भारतीय स्टेट बैंक
State Bank Of India

(60351) CHEMBUR, MUMBAI
SHREE SIDDHIVINAYAK MAHIMA, 1 ST FLOOR, PLOT-1,
IFC Code: SBIN 0000603833

केवल ३ महिने के लिए चैक VALID FOR 3 MONTHS ONLY
D D M M Y Y Y Y

PAY संदिप शिर्के को या उनके आदेश पर OR IRDER

रुपये RUPEES पचास हजार रुपये

अदा करें ₹ 50,000/-

खा. सं Ac/No 00951232511651

VALID FOR Rs. 10.000.000.00& UNDER

Prefix
04382000100

MULTI-CITY CHEQUE Payable at Par at All Branches of SBI

Please sign above

||214747|| 400002220 : 004994 31

भारतीय स्टेट बैंक
State Bank Of India

PAY-IN SLIP (Bank Copy)

Deposited in Branch ---------- शाखा

Set & Scroll No. --------- सेंट ॲण्ड स्क्रोल क्र

S/B A/c. No: बचत खाते क्र.: 1920

Date दिनांक

Paid in to the Credit of
खाता धारक का नाम _____

_____ in S/B.A/ C. यांचे बचत खाती

Cash / Cheques Rs.
रोख / चेक रुपये 15,540/-

Rs.(in Words) रु.(अक्षरी) पंधरा हजार पाचसो चाळीस

_____ जमा केले

Received by
प्राप्त कर्ता

Deposited by
जमाकर्ता के हस्तक्षर

SAVING DEPOSIT A/C बचत खाते जमा चलन

भारतीय स्टेट बैंक
State Bank Of India

Cash	Amount Rs.	ps
1000×	10	
500×	10	
100×	5	
50×		
20×	1	
10×		
5×		
Colns		
TOTAL		

PAY-IN SLIP (Bank Copy)

Deposited in Branch ---------- शाखा

My account is with Branch ----------

S/B A/c. No: बचत खाते क्र.: 1920

Tel. No
Mob.No

Date दिनांक

Paid in to the Credit of
खाता धारक का नाम _____

_____ in S/B.A/ C. यांचे बचत खाती

Cash / Cheques Rs.
रोख / चेक रुपये 15,540/-

Rs.(in Words) रु.(अक्षरी) पंधरा हजार पाचसो चाळीस जमा केले.

FOR OFFICE USE

Set & Scroll No. ----------
Verifying Offocial --------

PANIGIR NO For amount of Rs 50,000 & above

NOTE : PLEASE USE SEPARATE SLIP FOR LOCAL CHEQUES OUT STATION CHEQUES CASH DEPOSIT

Deposited by
जमाकर्ता के हस्तक्षर

मैं ग्राहक

अफलातीन क्लब के सदस्यों को छह के समूह बनाकर इस कार्य को पूरा करना है। उन्हें टीवी पर दिखाई जानेवाले किसी भी किस्म के एक विज्ञापन को चुनकर उसे कार्य का हिस्सा बनाना है। यह विज्ञापन, समूह के सभी सदस्यों को मालूम हो। इस विज्ञापन को पेपर पर लिखकर चर्चा शुरु करें। आगे दिए हुए बिंदुओं के आधार पर चर्चा कर सकते है।

- इस विज्ञापन में किस चीज के बारे में जानकारी दी गयी है?
- इस विज्ञापन में किस तरह का दावा किया गया है?
- क्या आपको लगता है कि, इस विज्ञापन में बतायी सभी चीजें पर्याप्त है?
- यदि ऐसा है तो, आप क्या कर सकते हो?
- यह विज्ञापन आपको किस वजह से पसंद आया? (इस्तेमाल किया गया, धन, काम करने वाले मॉडल इत्यादि)
- क्या आपको लगता है कि, विज्ञापन में दी हुई बातें सहीं है?
- समूह में बनाये इस कार्य को सबके सामने पेश किजिए।
- सभी समूह के प्रस्तुतिकरण के बाद सभी बच्चे साथ में बैठकर चर्चा करें कि, टीवी या अखबार में दिए गये विज्ञापनों पर ऐसे ही भरोसा करने से पहले, उनका सही मूल्यांकन करना जरुरी है।
- चीजों की खरीदारी के वक्त हम कौन कौन सी वजहों से चीजें खरीदते है, आगे दी हुई बातों पर गौर फर्माइए।
- क्या चीज सस्ती मिल रही है इसलिए?
- क्या उसका रंग, आकार अच्छा लगा इसलिए?
- क्या वह सही मायने में सभी नियमों का पालन कर बनायी गयी है?
- क्या वह खरीदने से मेरा ओहदा बढ़ रहा है, इस लिए?
- क्या वह चीज बनानेवाले लोगों की मदद हो इसलिए ?
- क्या उस चीज की मुझे बेहद जरुरत है, इसलिए?

आए दिन धोखाधड़ी के मामले सामने आते रहते है। ऐसे हालात में जागरुक ग्राहक के अधिकारों को समझना जरुरी है। सभी चीजों का मुल्य, इस्तेमाल करने का फयदा, नुकसान जैसी बातों को ध्यान में लेकर ही कोई भी चीज खरीदनी जरुरी है। इससे फसाने वाले लोगों पर रोक लगेगी और हम जागरुरक ग्राहक बन अपने अधिकार और कर्तव्य भी बखूबी निभा पायेंगे। हमारे लिए ग्राम पंचायत तथा संगठन मौजूद है, जो वक्त वक्त पर ग्राहकों को आनेवाली मुसीबतों में उन्हें सलाह देते है। यहां पर ग्राहक अधिकारों के साथ ग्राहक सुरक्षा कानूनों की जानकारी भी उनसे मिलती है।

भाग-4

सामाजिक सवाल तथा परिवर्तन की तैयारी

सामाजिक विषमताओं तथा उनसे निर्माण हुई असमान व्यवस्था एवम् अर्थव्यवस्था को समझने का, उस असमान व्यवस्था से सामने आए सवालों पर सोच–विचार करने का मौका इस विभाग से मिलेगा। इस समाज में आपका तथा आपके आस–पास के लोगों का विकास किस तरह हो सकता है, इसकी जानकारी यहां मिलेगी। इसके बारे में चर्चा/विचार कर आपको सामूहिक तौर पर प्रयास करने का मौके इस विभाग में मिल सकता है।

भूमिका कार्ड

इस कार्य में आप के पास कुछ भूमिकाओं के कार्ड है। इन्हें आप अलग अलग बनाइए और आपस में बांट लिजिए। आप उस भूमिका को मानकर अगला कार्य करेंगे। आपके सामने लिखी बातों से यदि आपको कार्ड मे दी आपकी भूमिका सही लगती है, तो आप एक कदम आगे जाएंगे। यदि लगता है, की बतायी हुई बात से मेरी भूमिका सहमत नहीं हो सकती, तो आप वही खड़े रहिए जहां पहले खड़े थे। धीरे–धीरे ऐसे करते कुछ भूमिकाएं आगे निकल जाएगी और कुछ भूमिकाएं कुछ कदम आगे नही चल पाएगी।

इससे देखिए की, इन भूमिकाओं को जीने वाले असली लोग किस तरह की जिंदगी जी रहे होंगे ?

1. मेरे पास खाने के लिए पर्याप्त भोजन है।
2. मैं मेरे परिवार से संबंधित निर्णय खुद ले सकती/सकता हूँ।
3. मैं मेरी/मेरा माध्यमिक शिक्षा पूरी कर रही हूँ/ कर रहा हूँ।
4. मैने उच्च शिक्षा पूरी की है या कर रही हूँ/कर रहा हूँ।
5. मुझे जब किसी सेहत संबंधी चीजों की जरुरत होती है तो, मै उसे कभी भी हासिल कर सकती/सकता हूँ।
6. मेरे पास इतने पैसे है कि, कभी भी मेरे रहन–सहन में कोई बदलाव नहीं आयेगा।
7. जब मुझे कोई चीज पसंद नहीं आयी, तो में मेरी नाराजगी जता सकती/सकता हूँ।
8. मैं मेरे काम की जगह पर किसी भी निर्णय में भागीदारी कर सकती/सकता हूँ।
9. मेरी आर्थिक स्थिति इतनी मजबूत है की, में किसी भी जरुरतमंद इन्सान को मदद कर सकती हूँ/सकता हूँ।
10. मैं मेरी बस्ती/गाँव में सुरक्षित हूँ।
11. मुझे लगता है कि, मेरा भविष्य मेरे मुट्ठी में है।
12. आस–पास के लोग मेरा सम्मान करते है।
13. समाज के विकास में मेरी भूमिका महत्त्वपूर्ण है।
14. मुझे दो वक्त का पेट भर खाना मिलता है।
15. बचपन से लेकर आज तक मेरा जीवन सुरक्षित रहा है।
16. मैने बचपन से लेकर आजतक बहुत कठिनाइयों का सामना किया है।
17. मेरे काम से मुझे पर्याप्त आमदनी मिलती है, जिससे मैं खुशी–खुशी गुजारा कर सकता हूँ।

भूमिका कार्ड

किसान	झोपड़ी में रहनेवाली औरत	राष्ट्रपति
प्राइवेट स्कूल टीचर	विवाहित लड़की	मैयर/महापौर
हिरो	सरकारी विद्यालय की टीचर	वकील
अखबार का संपादक	टीवी स्टार	बाल विवाहित लड़की
सरकारी अधिकारी	लेखक	उद्योगपति
बैंक अधिकारी	वृद्धा आश्रम में रहने वाली बुढ़ी विधवा	सरपंच
गूँगा लड़का	बस्ती का गुंडा	नर्स
पुलिस अधिकारी	राजनैतिक नेता	मजदूर
खेत मजदूर	वाहन चालक	सेना अधिकारी
अनाथालय की लड़की	कुली	डॉक्टर
अंतर्राष्ट्रीय कंपनी में काम करने वाला अधिकारी	सड़क पर रहने वाला	सब्जियाँ बेचने वाली औरत
स्वयं सेवी संस्था की कार्यकर्ता	पुलिस महिला अधिकारी	उद्योगी महिला
दैनिक मजदूरी करनेवाली लड़की	मछुआरा	झुग्गी झोपड़ी में रहने वाली अकेली औरत

समस्या का चुनाव एवम् नियोजन

इस सत्र में, आपको किसी एक समस्या का चुनाव करना है। मिसाल के तौर पर एक समस्या के बारे में तालिका में बताया गया है। इस समस्या को सुलझाने के लिए किन चीजों की जरुरत है? किस तरह से नियोजन कर काम शुरु कर सकते है? इसके बारे में विस्तृत रुप से जानकारी यहां मिलेगी। इससे आप किसी भी तरह के समाधान के लिए जरुरी प्रयासों के बारे में आपको निश्चित रुप से यहां जानकारी मिलेगी।

समस्याः जमीन की मिट्टी का बहाव

समस्या की वजह	विकल्प	मध्यम	जरुरी संसाधन	समय		किसका सहयोग जरुरी है	अन्य महत्वपूर्ण मुद्दे
				तैयारी	वास्तविक कार्य		
1. पेड़ की कटाई	लोगों को सचेत करना पड़ेगा	नुकड़ नाटक		15 दिन	1 दिन	अध्यापक	नाटक लिखना पड़ेगा
	बायोगैस	बयोगैस प्लाँट की फिट्टिंग	बायोगैस प्लॉट की समान	2 माह	6 दिन	ग्राम पंचायत	
2. मिट्टी के बहाव को रोकना	छोटे बाँध	बाँध का निर्माण	मिट्टी और पत्थर	2 माह	6 दिन	गाँव के लोग	

समस्या का चुनाव एवम् नियोजन

समस्या : बाल-विवाह

प्रमुख कार्यक्रम : बाल-विवाह विरोध पोस्टर प्रदर्शनी से जागरुकता

समय :

समस्या विकास विकल्प एवं कृति	काम का समय कब तक ?																जिम्मेदारी
काम की सूची	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	
प्रमुख काम 1) पोस्टर बनाना																	प्रमुख जिम्मेदारी राधा व मिना
अन्य काम																	
1. कागज, रंग, पेन्सिल लाना																	
2. कागज पर चित्र निकालना																	मिना व सोनल
3. बॉर्डर से कार्ड बोर्ड पर चिपकाना																	मिहिर
4. प्रदर्शनी के लिए तैयार रखना																	राजेश
प्रमुख काम -२																	प्रमुख जिम्मेदारी
अन्य काम 1.																	

ग्रे रंग में दिए हुए काम पुरे हुए हैं।

काले रंग के काम बहुत महत्त्वपूर्ण है।

NEEDS

EXIST TO IMPACT

(Network for Enterprise Enhancement and Development Support)

visit us : www.needsngo.in

Printing Supported By

Simavi

331_(06-17) Annapurna Press 0651-2331800
e-mail : appranchi.1969@gmail.com